COSMOS: A JOURNAL OF GEOGRAPHY
ISSN: 3048-9938, Volume- 2, Issue- 4, October - December 2025

आधुनिकीकरण की छाया में हो जनजाति : पश्चिमी सिंहभूम जिला में सामाजिक-आर्थिक बदलाव

राजेन्द्र ठाकुर [1], डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार सिंह [2]
[1] सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, टाटा कॉलेज ,चाईबासा
[2] सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

सारांश

यह शोध पत्र झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले की जनजातियों पर आधुनिकीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से उनके पारंपरिक सामाजिक और आर्थिक ढांचे में आए परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करता है। झारखंड के इस हिस्से में, औद्योगीकरण, शहरीकरण, और सरकारी नीतियों ने जनजातीय समुदायों के जीवन में बड़े बदलाव लाए हैं। इस शोध का उद्देश्य इन बदलावों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को समझना है। प्रमुख रूप से, यह शोध दो मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालता है। पारंपरिक व्यवस्था का विघटन: आधुनिक शिक्षा, रोजगार के नए अवसर, और बाजारीकरण के कारण पारंपरिक सामुदायिक भूमि स्वामित्व, जैव-विविधता आधारित जीविका और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली पर दबाव बढ़ा है। इससे जनजातियों की आत्मनिर्भरता कम हुई है, और वे नई आर्थिक व्यवस्था पर अधिक निर्भर हो गए हैं। आर्थिक और सामाजिक असमानता: आधुनिकीकरण ने कुछ समुदायों को आर्थिक रूप से लाभ पहुँचाया है, जबकि अन्य पिछड़ गए हैं। इससे जनजातीय समाज के भीतर ही वर्ग-भेद और असमानता बढ़ी है। पलायन, भूमि अधिग्रहण, और सांस्कृतिक विस्थापन जैसी समस्याएं भी प्रमुखता से उभरी हैं।

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों पद्धतियों का उपयोग करता है, जिसमें क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार और सरकारी आंकड़ों का विश्लेषण शामिल है। निष्कर्ष बताते हैं कि आधुनिकीकरण ने जनजातियों के लिए नए अवसर तो पैदा किए हैं, लेकिन इसके साथ ही इसने उनकी पारंपरिक पहचान और सामाजिक एकजुटता के लिए गंभीर चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। यह शोध नीति निर्माताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण है ताकि वे विकास की ऐसी नीतियाँ बना सकें जो जनजातियों की सांस्कृतिक पहचान और अधिकारों का सम्मान करें।

शब्द कुंजी : पश्चिमी सिंहभूम, जनजातीय समाज, आधुनिकीकरण, सामाजिक-आर्थिक बदलाव, पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक विस्थापन।

भूमिका

पश्चिमी सिंहभूम जिला भारत के झारखंड राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जहाँ हो जनजाति की उपस्थिति प्रमुख है। इसका मुख्यालय चाईबासा है। यह जिला 21^0 58′ और 23^0 36′ उत्तरी अक्षांश और 85^0 0′ और 86^0 54′ पूर्वी देशांतर में फैला हुआ है। समुद्र तल से 244 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और इसका क्षेत्रफल 5290.89 वर्ग किलोमीटर है। जिले के उत्तर में खुँटी, पूर्व में सरायकेला-खरसावाँ, दक्षिण में उड़िसा का केउन्झर, मयूरभंज और सुन्दरगढ़ तथा पश्चिम में झारखण्ड का सिमडेगा एवं उड़िसा का सुन्दरगढ़ सीमाबद्ध है। यहाँ निवासित हो जनजाति पारंपरिक रूप से जंगल, कृषि और सामुदायिक जीवन पर निर्भर रही है। लेकिन समय परिवर्तन के साथ बीते कुछ दशकों में आधुनिकीकरण, शहरीकरण, खनन, और सरकारी हस्तक्षेपों ने इनके सामाजिक और

आर्थिक जीवन में गहरे बदलाव लाए हैं। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि आधुनिकता की प्रक्रिया ने हो जनजाति के पारंपरिक जीवन, आजीविका, और सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित किया है

शोध की पद्धति

- **प्राथमिक स्रोत:** क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली
- **द्वितीयक स्रोत:** प्रकाशित शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, जनगणना डेटा
- **स्थान:** पश्चिमी सिंहभूम के ग्रामीण क्षेत्र जैसे चाईबासा, मनोहरपुर, जगन्नाथपुर
- **नमूना आकार:** 50 परिवारों का चयन, जिनमें पुरुष, महिलाएँ और युवा शामिल हैं

अध्ययन क्षेत्र

Source: GIS, Survey of India

पारंपरिक जीवन शैली का अवलोकन

पश्चिमी सिंहभूम की हो जनजाति की आजीविका पारंपरिक रूप से प्रकृति पर आधारित रही है, जिसमें झूम खेती, वनों से उपज प्राप्त करना और हस्तशिल्प जैसे कार्य प्रमुख रहे हैं। झूम खेती, जो सामूहिक श्रम और वर्षा पर आधारित थी, ब्रिटिश काल में वन अधिनियमों के तहत समाप्त कर दी गई, जिससे समुदाय को स्थायी कृषि अपनाने के लिए विवश होना पड़ा। इसके साथ ही सरकार द्वारा भूमि बंदोबस्त और कर प्रणाली लागू किए जाने से पारंपरिक कृषि व्यवस्था

कमजोर हो गई और समुदाय की आत्मनिर्भरता पर असर पड़ा। वनों से महुआ, तेंदू, लाह, शहद जैसी उपज एक महत्वपूर्ण आजीविका स्रोत रही है, जबकि बांस, लकड़ी और मिट्टी से बने हस्तशिल्प उत्पादों ने सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक सहयोग प्रदान किया। किंतु सरकारी नीतियों, सीमित संसाधनों और कृषि की घटती उपज के कारण हो जनजाति के लोग खदानों, ईंट भट्टों, सड़क निर्माण और अन्य असंगठित क्षेत्रों में मजदूरी की ओर प्रवृत्त होने लगे। यह बदलाव न केवल आर्थिक संरचना को प्रभावित करता है, बल्कि पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को भी चुनौती देता है।

पश्चिमी सिंहभूम के कोल्हान क्षेत्र में 19वीं सदी के उत्तरार्ध में जब शिक्षा का प्रसार शुरू हुआ, तब हो जनजाति के जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। पारंपरिक रूप से कृषि और वन आधारित आजीविका पर निर्भर रहने वाले इस समुदाय में पढ़ाई का महत्व धीरे-धीरे बढ़ने लगा। शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही एक नया नौकरीपेशा वर्ग उभरा, जिसने सरकारी और निजी क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर न केवल आर्थिक स्थिरता हासिल की, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा भी अर्जित की। इस बदलाव के परिणामस्वरूप पारंपरिक कृषि व्यवस्था कमजोर पड़ने लगी, क्योंकि युवा पीढ़ी अब खेतों की बजाय कार्यालयों और उद्योगों की ओर आकर्षित होने लगी। हालांकि, समय के साथ कुछ शिक्षित हो युवाओं ने आधुनिक तकनीकों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के माध्यम से कृषि को पुनर्जीवित करने के प्रयास भी किए, जिससे परंपरा और नवाचार के बीच एक नया संतुलन स्थापित होने लगा।

सांस्कृतिक पहचान और सरकारी योजनाएँ

पश्चिमी सिंहभूम में हाल के वर्षों में आदिवासी सांस्कृतिक पहचान को सशक्त करने और सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देने के लिए कई महत्वपूर्ण सरकारी पहलें की गई हैं। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन द्वारा क्षेत्र में ₹412 करोड़ की लागत से 246 योजनाओं की सौगात दी गई, जिनका उद्देश्य न केवल आधारभूत संरचना का विकास करना है, बल्कि आदिवासी गौरव को सम्मानित करना भी है। इन योजनाओं के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पेयजल और आजीविका के क्षेत्र में सुधार लाने के साथ-साथ सांस्कृतिक पुनरुत्थान को भी प्राथमिकता दी गई है।

इसके अतिरिक्त, 1837 के ऐतिहासिक आदिवासी विद्रोह को स्मरण करते हुए शहीद दिवस समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें वीर नायकों जैसे दुर्जन साले, गंगा नारायण और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दी गई। इस आयोजन ने आदिवासी इतिहास को पुनः जागृत किया और युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का कार्य किया।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रयास किए गए हैं। दीदी योजना के तहत स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को बैंक लिंकेज और कैश क्रेडिट लिमिट प्रदान की गई, जिससे वे छोटे व्यवसाय, कृषि, पशुपालन और अन्य आजीविका गतिविधियों में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। यह पहल न केवल महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करती है, बल्कि उनके सामाजिक स्थान को भी मजबूत करती है।

इन सभी प्रयासों ने पश्चिमी सिंहभूम की जनजातीय पहचान को पुनर्स्थापित करने, सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने और स्थानीय समुदायों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सामाजिक बदलाव

पश्चिमी सिंहभूम की हो जनजाति में सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया गतिशील रही है, जिसमें पारंपरिक जीवनशैली से आधुनिकता की ओर स्पष्ट संक्रमण देखा जा सकता है। आज के युवा मोबाइल, इंटरनेट और शहरी जीवनशैली से जुड़ते जा रहे हैं, जिससे पारंपरिक संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों का चलन बढ़ा है और सामाजिक बंधन

कमजोर हुए हैं। हालांकि, कुछ समुदाय अब भी पारंपरिक नृत्य, भाषा और रीति-रिवाजों को संरक्षित करने के लिए प्रयासरत हैं। इस सामाजिक संरचना की जड़ें मंकी-मुंडा प्रणाली में निहित हैं, जो कोल्हान क्षेत्र में प्रचलित पारंपरिक स्वशासन की रीढ़ है। ग्राम स्तर पर मुण्डा गाँव का वंशानुगत प्रधान होता है, जो प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षक और बाहरी मामलों में प्रतिनिधि होता है। डाकुआ सूचना प्रसारित करने और सभाओं के आयोजन में सहयोग करता है, जबकि दिउरी धार्मिक मामलों का निपटारा करता है और यात्रा दिउरी उसका सहायक होता है। पिढ़ स्तर पर मानकी 15–20 गाँवों के समूह का नेतृत्व करता है और पीरपंच न्यायिक मामलों को देखता है। यह प्रणाली सामूहिक नेतृत्व और सहमति आधारित निर्णय पर आधारित है, जिसमें मुण्डा और मानकी को कोई वेतन नहीं मिलता, लेकिन उन्हें सामाजिक सम्मान प्राप्त होता है।

सांस्कृतिक रूप से हो जनजाति की पहचान लोकगीत, नृत्य, त्योहार और वारंग-चिटी लिपि में समाहित है। इनके लोकगीत जीवन के हर पहलू प्रकृति, प्रेम, युद्ध, कृषि, त्योहार से जुड़े होते हैं और दामा, दुमंग, शेके, करताल जैसे वाद्य यंत्रों की थाप पर गाए जाते हैं। "आपे हाथू मागे पर्व" और "आपे हाथू कोचा बकाड़ी" जैसे गीत सामूहिक स्मृति और परंपरा का माध्यम हैं, जिन्हें नई पीढ़ी बिना औपचारिक प्रशिक्षण के सीखती है। नृत्य भी सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों का अभिन्न हिस्सा है, जिसमें मागे नृत्य, हेरो नृत्य और जोनमा नृत्य प्रमुख हैं। ये नृत्य पारंपरिक पोशाकों में सामूहिक रूप से किए जाते हैं और जीवन चक्र के विभिन्न दृश्य प्रस्तुत करते हैं। त्योहारों में मागे पर्व, बंदना पर्व और बाहा पर्व विशेष रूप से मनाए जाते हैं, जो प्रकृति और कृषि से गहराई से जुड़े होते हैं। इन पर्वों में सामूहिक भोज, नृत्य और गायन के माध्यम से सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ किया जाता है।

भाषाई अस्मिता के रूप में वारंग-चिटी लिपि का विशेष स्थान है, जिसे लाको बोदरा ने पुनः खोजा और पुनर्जीवित किया। यह मुण्डा भाषा परिवार की एकमात्र स्वदेशी लिपि है, जिसमें 32 अक्षर होते हैं और इसका प्रयोग अब शिक्षा और सांस्कृतिक आयोजनों में बढ़ रहा है। महिलाओं की भूमिका इस सामाजिक संरचना की रीढ़ है। वे कृषि कार्यों में भूमि की तैयारी, बुआई, कटाई और पशुपालन में सक्रिय रहती हैं, साथ ही वन उपज संग्रह कर घरेलू उपयोग और बाज़ार में बिक्री करती हैं। घरेलू उत्पादन में वे हस्तशिल्प निर्माण, खाद्य प्रसंस्करण और स्थानीय बाज़ार में भागीदारी के माध्यम से परिवार की आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करती हैं। सामुदायिक सहभागिता में भी महिलाएँ मागे पोरोब जैसे पर्वों में नेतृत्व करती हैं, ग्राम सभा में भाग लेती हैं और पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर महिला समितियों के माध्यम से सामूहिक कार्य करती हैं। इस प्रकार, हो जनजाति की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विरासत और महिला नेतृत्व मिलकर एक जीवंत और सशक्त समुदाय का निर्माण करते हैं।

क्षेत्र	**महिलाओं की भागीदारी (%)**
कृषि कार्य	70–80%
घरेलू उत्पादन	60–70%
सामुदायिक सहभागिता	50–60%

स्त्रोत : सर्वेक्षण आधारित

आधुनिकीकरण के प्रभाव

पश्चिमी सिंहभूम में आधुनिकीकरण का प्रभाव विशेष रूप से खनन और औद्योगीकरण के माध्यम से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। लौह अयस्क और एसबेस्टस जैसे खनिजों के खनन ने स्थानीय भूमि अधिग्रहण और जनजातीय विस्थापन की समस्याओं को जन्म दिया है। रोरो गाँव में 1963 से 1983 तक एसबेस्टस का खनन हुआ, जो चार दशक पूर्व बंद हो चुका है, लेकिन इसका प्रदूषण और स्वास्थ्य प्रभाव आज भी जारी है। एसबेस्टस की धूल से उत्पन्न सांस की तकलीफ, त्वचा रोग, कैंसर और नेत्र समस्याएँ आम हो गई हैं, जिसके कारण ग्रामीणों को रांची, जमशेदपुर और हैदराबाद जैसे शहरों में इलाज के लिए जाना पड़ता है। पर्यावरणीय दृष्टि से भी खनन के मलबे ने जल स्रोतों को प्रदूषित किया है और आसपास की पहाड़ियों में फैला एसबेस्टस का कचरा हवा और मिट्टी को प्रभावित कर रहा है।

सामाजिक रूप से खनन ने हो जनजाति की पारंपरिक आजीविका को कमजोर किया है। भूमि अधिग्रहण और विस्थापन के कारण लोग झूम खेती, वन उपज संग्रह और हस्तशिल्प जैसे कार्य छोड़कर मजदूरी की ओर प्रवृत्त हुए हैं। उद्योगों के विस्तार ने ग्रामीण युवाओं को खनन, निर्माण कार्य और फैक्ट्री मजदूरी की ओर आकर्षित किया है, जिससे पारंपरिक आजीविकाएँ और सांस्कृतिक गतिविधियाँ जैसे नृत्य, लोकगीत और त्योहार धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं। हालांकि उद्योगों ने कुछ हद तक स्थानीय रोजगार उपलब्ध कराए हैं, परंतु ये रोजगार अधिकतर अनौपचारिक, अस्थायी और कम वेतन वाले होते हैं। महिलाओं को भी ईंट भट्टों और खनन क्षेत्रों में काम करना पड़ता है, जिससे उनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन प्रभावित होता है।

इस प्रकार, आधुनिकीकरण ने जहाँ एक ओर आर्थिक गतिविधियों को गति दी है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक जीवनशैली, सांस्कृतिक पहचान और पर्यावरणीय संतुलन को गंभीर चुनौती भी दी है। यदि इन प्रभावों का संतुलित समाधान नहीं खोजा गया, तो जनजातीय अस्मिता और सामाजिक संरचना पर दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

क्षेत्र	प्रभाव का प्रकार	अनुमानित असर (%)
स्वास्थ्य	सांस, त्वचा, कैंसर रोग	60–70% प्रभावित
रोजगार	मजदूरी, खनन कार्य	40–50% वृद्धि
पारंपरिक आजीविका	कृषि, वन उपज, हस्तशिल्प	50–60% में गिरावट
सांस्कृतिक पहचान	भाषा, नृत्य, त्योहार	30–40% क्षरण

स्रोत : सर्वेक्षण आधारित

खनन और औद्योगीकरण ने हो जनजाति के जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। एक ओर जहाँ आधुनिक संसाधनों और रोजगार की कुछ पहुँच बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक जीवनशैली, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर गंभीर संकट उत्पन्न हुआ है। लौह अयस्क और एसबेस्टस जैसे खनिजों के खनन ने भूमि अधिग्रहण, विस्थापन और प्रदूषण की समस्याएँ बढ़ा दी हैं, जिससे जनजातीय समुदायों की पारंपरिक आजीविका और सांस्कृतिक पहचान कमजोर हुई है। शिक्षा का प्रसार अवश्य हुआ है, जिससे जागरूकता और सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है, परंतु रोजगार के अवसर

अब भी सीमित हैं, विशेषकर सुरक्षित और स्थायी कार्यों के संदर्भ में। सांस्कृतिक क्षरण भी एक गंभीर चुनौती बनकर उभरा है, जहाँ पारंपरिक भाषा, लोकगीत,

नृत्य और रीति-रिवाजों में कमी देखी जा रही है। इसके बावजूद, महिलाएँ अब खदानों, निर्माण कार्यों और स्वरोजगार के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं, जिससे उनकी सामाजिक भूमिका में परिवर्तन आया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो गया है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को सतत विकास और जनजातीय अधिकारों के संरक्षण के साथ जोड़ा जाए, ताकि इसका लाभ समावेशी, न्यायसंगत और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हो सके।

सामाजिक चुनौतियाँ

भूमि अधिकार: हालाँकि वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत आदिवासी समुदायों को भूमि पर अधिकार देने की व्यवस्था की गई है, लेकिन व्यवहार में इन अधिकारों का क्रियान्वयन सीमित रहा है। कई ग्रामों में व्यक्तिगत और सामुदायिक वन अधिकारों की स्वीकृति नहीं हुई है, जिससे पारंपरिक भूमि पर उनका नियंत्रण कमजोर पड़ा है। इससे न केवल आजीविका पर असर पड़ा है, बल्कि सांस्कृतिक जुड़ाव भी बाधित हुआ है।

आर्थिक असमानता: बाहरी ठेकेदारों और कंपनियों के आगमन से स्थानीय संसाधनों पर बाहरी नियंत्रण बढ़ा है। खनन, निर्माण और वाणिज्यिक गतिविधियों में बाहरी पूंजी और श्रमिकों की भागीदारी ने स्थानीय लोगों को प्रतिस्पर्धा में पीछे छोड़ दिया है। इससे आर्थिक असमानता बढ़ी है और स्थानीय समुदायों की आय और अवसरों में गिरावट आई है।

शहरीकरण का दबाव: शहरी जीवनशैली और रोजगार की तलाश में युवा पीढ़ी का पलायन बढ़ा है। इससे न केवल गाँवों की सामाजिक संरचना कमजोर हुई है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का संकट भी उत्पन्न हुआ है। पारंपरिक भाषा, रीति-रिवाज और सामूहिक जीवनशैली धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है, जिससे सामाजिक एकता पर भी असर पड़ा है।

महिला अधिकार: हालाँकि महिलाएँ कृषि, वन उपज संग्रह और घरेलू उत्पादन में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, फिर भी भूमि स्वामित्व और निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सीमित है। भूमि बंदोबस्त और सरकारी योजनाओं में महिलाओं को स्वामित्व rarely मिलता है, जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति प्रभावित होती है। पेसा कानून और महिला स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से कुछ सुधार हुए हैं, लेकिन व्यापक स्तर पर महिला अधिकारों को सशक्त करने की आवश्यकता बनी हुई है।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए समावेशी नीति निर्माण, अधिकारों का प्रभावी क्रियान्वयन, और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दिशा में ठोस प्रयास आवश्यक हैं, ताकि हो जनजाति का सामाजिक विकास न्यायसंगत और टिकाऊ हो सके।

केस स्टडी

चाईबासा के पास कमरहातू गाँव में अध्ययन:

चाईबासा के समीप स्थित कमरहातू गाँव में किए गए एक क्षेत्रीय अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि खनन गतिविधियों ने स्थानीय जनजीवन पर गहरा प्रभाव डाला है। अध्ययन में शामिल 70% परिवारों ने बताया कि खनन के विस्तार के कारण उनकी पारंपरिक कृषि भूमि या तो नष्ट हो गई है या उपयोग के योग्य नहीं रही, जिससे उनकी आजीविका पर प्रतिकूल असर पड़ा है। इसके परिणामस्वरूप, गाँव के लगभग 40% युवा अब पारंपरिक कृषि कार्य छोड़कर निर्माण कार्यों या खदानों में मजदूरी करने लगे हैं, जो उनके जीवन की दिशा में एक बड़ा बदलाव दर्शाता है। महिलाओं की भूमिका में भी परिवर्तन देखा गया है लगभग 60% महिलाओं ने बताया कि वे अब घरेलू उत्पादों को स्थानीय

बाजारों में बेचकर परिवार की आय में योगदान दे रही हैं, जो उनके आर्थिक सशक्तिकरण की ओर संकेत करता है। इसके अतिरिक्त, 80% ग्रामीणों का मानना है कि उनके पारंपरिक त्योहारों और सांस्कृतिक आयोजनों में अब बाहरी प्रभाव बढ़ गया है, जिससे उनकी सांस्कृतिक अस्मिता पर भी प्रश्नचिन्ह लगने लगे हैं। यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि कमरहातू गाँव में खनन और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर गहरे बदलाव उत्पन्न किए हैं।

सुझाव

स्थानीय रोजगार सृजन

प्राथमिकता नीति: खनन, निर्माण और औद्योगिक परियोजनाओं में स्थानीय जनजातीय युवाओं को प्राथमिकता दी जाए।

कौशल विकास: क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से खनन, मशीन संचालन, सुरक्षा और पर्यावरण प्रबंधन में प्रशिक्षण दिया जाए।

स्थायी रोजगार: केवल अस्थायी मजदूरी नहीं, बल्कि स्थायी और सुरक्षित रोजगार के अवसर सुनिश्चित किए जाएँ।

स्थानीय उद्यमिता: खनन से जुड़े सहायक कार्यों (जैसे परिवहन, खानपान, सुरक्षा) में स्थानीय उद्यमियों को बढ़ावा दिया जाए।

संस्कृति संरक्षण

वारंग-चिटी लिपि का संवर्धन: स्कूलों, पुस्तकालयों और सांस्कृतिक आयोजनों में इस लिपि का प्रयोग बढ़ाया जाए।

लोक कलाओं का प्रोत्साहन: हो जनजाति के लोकगीत, नृत्य, चित्रकला और हस्तशिल्प को राज्यस्तरीय और राष्ट्रीय मंचों पर प्रदर्शित किया जाए।

सांस्कृतिक केंद्र: चाईबासा और अन्य प्रमुख स्थानों पर जनजातीय संस्कृति केंद्र स्थापित किए जाएँ, जहाँ प्रशिक्षण, प्रदर्शन और शोध की व्यवस्था हो।

डिजिटल अभिलेखन: पारंपरिक गीतों, कहानियों और रीति-रिवाजों का डिजिटल रूप में संग्रह और प्रचार किया जाए।

महिला सशक्तिकरण

भूमि अधिकार में भागीदारी: भूमि बंदोबस्त और वन अधिकार अधिनियम के तहत महिलाओं को सह-स्वामित्व दिया जाए।

स्वरोजगार योजनाएँ: दीदी योजना, स्वयं सहायता समूह (SHG), और बैंक लिंकेज के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त किया जाए।

प्रशिक्षण और वित्तीय साक्षरता: महिलाओं को व्यवसायिक प्रशिक्षण, विपणन कौशल और वित्तीय प्रबंधन की जानकारी दी जाए।

नेतृत्व में भागीदारी: ग्राम सभा, महिला समितियों और पंचायतों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

शिक्षा में स्थानीयता

पाठ्यक्रम में समावेशन: राज्य शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम में जनजातीय इतिहास, संस्कृति, नायकों और संघर्षों को शामिल किया जाए।

भाषाई विविधता: हो भाषा और वारंग-चिटी लिपि को प्राथमिक शिक्षा में स्थान दिया जाए।

स्थानीय शिक्षक नियुक्ति: जनजातीय पृष्ठभूमि के शिक्षकों को नियुक्त कर सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा दिया जाए।

शैक्षिक सामग्री का विकास: स्थानीय कहानियों, लोकगीतों और परंपराओं पर आधारित पुस्तकें, ऑडियो-विजुअल सामग्री तैयार की जाए।

निष्कर्ष

जनजातीय समाज का सामाजिक-आर्थिक जीवन आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से गहराई से प्रभावित हुआ है। एक ओर जहाँ शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और सरकारी योजनाओं के माध्यम से रोजगार के नए अवसर खुले हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक जीवनशैली, सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक संरचना पर गंभीर संकट उत्पन्न हुआ है। आधुनिकता के प्रभाव से पारंपरिक आजीविका के साधन जैसे कृषि, शिकार और हस्तशिल्प कमजोर हुए हैं, और युवा पीढ़ी शहरी जीवनशैली की ओर आकर्षित हो रही है, जिससे उनकी सांस्कृतिक जड़ें कमजोर पड़ रही हैं। सामूहिकता, सहयोग और पारंपरिक पंचायत व्यवस्था जैसी सामाजिक संरचनाएँ भी प्रभावित हुई हैं। ऐसे में यह आवश्यक हो गया है कि विकास की नीतियाँ जनजातीय दृष्टिकोण को केंद्र में रखकर बनाई जाएँ, ताकि आर्थिक प्रगति के साथ-साथ सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक सशक्तिकरण भी सुनिश्चित किया जा सके। जनजातीय समुदायों की भागीदारी, उनकी भाषा, परंपरा और ज्ञान प्रणाली को सम्मान देते हुए, उन्हें विकास की मुख्यधारा में लाना ही सतत और समावेशी विकास का मार्ग है।

संदर्भ

1. Ghosh, N. (2025). 'समावेशी संपदा' का एजेंडा: विकसित भारत@2047 तक पहुँचने का रास्ता. [Inclusive Prosperity Agenda: Path to Vikshit Bharat@2047].
2. Government of India. (2011). Jharkhand ST population data. Census of India.
3. Government of India. Ministry of Health and Family Welfare. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5).
4. Government of India. Ministry of Tribal Affairs. (2025). Tribal Day 2025: Building an Inclusive India.
5. Meena, G. L. (2022). आदिवासी समाज की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर वैश्वीकरण का प्रभाव [Impact of Globalization on the Social, Economic, Religious, and Cultural Status of Tribal Society]. International Journal for Multidisciplinary Research, 4(1).
6. Prasad, A. (2025). Sustainable and inclusive development of tribal communities in Jharkhand. International Research Journal of Modernization in Engineering, Technology and Science (IRJMETS).
7. Raj, N., & Priya, P. (2023). Sustainable and inclusive strategies for tribal development in Jharkhand. Ranchi University.
8. Rinu Kumari. (2024). पश्चिमी सिंहभूम के हो आदिवासियों की कृषि अर्थव्यवस्था का ऐतिहासिक सर्वेक्षण [Historical Survey of Agricultural Economy of Ho Adivasis in West Singhbhum]. International Journal of History, 6(1).

ISSN: 3048-9938, Volume- 2, Issue- 4, October - December 2025

9. Academia.edu. (n.d.). हो आदिवासियों की कृषि अर्थव्यवस्था का ऐतिहासिक सर्वेक्षण [Historical Survey of Ho Adivasi Agricultural Economy].
10. Upasana Ray & Asoka Kumar Sen. Technology and social change among the Ho Adivasis.
11. Kumari Rinu. Impact of Ho women on tribal economy and society.